

सरस्वती

आचार्य सानन्द जी

प्रतिकों की उपासना

कक्षा में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। पिछले भाग में हमने कैलाशपति महाराजा शिव भगवान शिव के प्रतीकात्मक स्वरूप पर विचार किया और समझा कि प्रतीक का उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर एक अच्छी भावना का निर्माण करना है। जिस भावना में आकर वह अपने लिए, परिवार के लिए और समाज के लिए देश, राष्ट्र और विश्व के कुछ अच्छा करे, कुछ अच्छा बने, उसके जीवन की सार्थक उपयोगिता हो, उसके कार्यों के परिणाम विश्वव्यापी हों और सबके लिए लाभदायक हों। उसी क्रम में आज हम विद्या की देवी भगवती सरस्वती पर विचार करेंगे। सरस्वती क्या हैं, सरस्वती का वैदिक स्वरूप क्या है उसपर भी विचार करेंगे। और जो एक लम्बी परम्परा से हमारे स्कूल, कॉलेजों में, विद्यालयों में जो प्रतीमा मिलती है जिसको सरस्वती के नाम से सम्बोधित किया जाता है उस प्रतिमा का नाम सरस्वती रखा है उसपर भी विचार करेंगे। पिछले लगभग 2012 में 100 से अधिक स्कूल, कॉलेजों में मैं जाता रहा नशामुक्ति के प्रचारार्थ। उन दिनों जहां पर भी जाता था जिस विद्यालय में भी तो वहां देखाता था कि मेरे ही पास में मंच पर या साइड में कुर्सी पर सरस्वती की तस्वीर रख देते थे और मुझे कहते थे कि इसको माला पहनाओ या अगरबत्ती जलाओ या दीपक जलाओ इसके सामने। तो मैं उन्हें कहता था कि देखों अभी तो आप ही जला दो फिर मेरे प्रवचन के बाद में यदि आप कहेंगे तो दोबारा मैं जला दूंगा। तो स्कूल, कॉलेजों में कहीं 400, कहीं 500, कहीं 1000, कहीं 1500 छात्र-छात्रायें हुआ करते थे। और लगातार 100 से अधिक स्कूल, कॉलेजों में जहां पर भी जाता था वहां नशामुक्ति के साथ-साथ मैं जो तस्वीर तो हर स्कूल में लगाते ही लगाते थे पूजा की सरस्वती की तो वहां पर मैं हर जगह इस बात का निवेदन करता था ताकि इसको लेकर जो अन्धविश्वास बना हुआ है वह दूर हो।

आइये हम इसपर विचार करते हैं। सरस्वती चित्र में जो हमें चरित्र छिपा हुआ दिखाई दे रहा है। सरस्वती के चित्र में जो विज्ञान छिपा हुआ दिखाई दे रहा है वो कुछ ऐसा है सामान्य बुद्धि से देखेंगे तो ऐसा लगेगा कि किसी नादान व्यक्ति के नासमझी का

परिणाम ये चित्र है। क्योंकि इसका जो वाहन है वो हंस है और हंस लगभग 8 से 10 किलो वजन का पक्षी होगा अधिकतम इससे ज्यादा नहीं और ये जो सरस्वती माँ है इस महिला का कम से भी कम होना चाहिए 60 किलो का 50 से 60 किलो के बीच। अब 50 से 60 किलो की कोई महिला यदि किसी 8 किलो 10 किलो के पक्षी पर बैठेगी तो उस पक्षी का क्या हाल होगा स्वाभाविक है उसका तो कुचुम्बर ही बन जायेगा वो तो मर जायेगा उसका तो प्राण पखेरू ही उड़ जायेगा। तो बनाने वाले ने कितना इसमें दिमाग लगाया कितनी दूरदर्शिता रखी। सामान्य बुद्धि से विचारेंगे तो बनाने वाला मूर्ख नजर आयेगा। और यहां आकर सामान्य आदमी की बुद्धि कुंठित हो जाती है कि गणेश जी इतना बड़ा आदमी एक छोटे से 100—150 ग्राम के 200 ग्राम, 250 ग्राम वजन के एक चूहे पर बैठे हैं, चूहे पर उनकी मूर्ति रखी हुई है या उनकी सवारी चूहा है। तो बड़ा आश्चर्य होता है कि जिसकी गर्दन भी हाथी की है और पेट भी इतना बड़ा है इतना भारी आदमी और एक चूहे पर सवारी करता है, चूहे पर घूमता है, चूहे पर यात्रा करता है कैसे सम्भव है। अब सामान्य बुद्धि का आदमी सोचेगा तो उसे वह मूर्खता ही नजर आयेगी कि बनाने वाला या तो कोई हिन्दू विरोधी था, आर्य विरोधी था, जिसकी मूर्खतापूर्वक बुद्धि का प्रलाप यह गणेश की प्रतिमा है और बहुत सारे लोग जो खण्डन करने वाले हैं वो खण्डन करते हैं दूसरे सम्प्रदाय वाले हैं वो उसका उपहास उड़ाते हैं क्योंकि स्वाभाविक है क्योंकि मोटी आंखों से बिना बुद्धि की आंखों से जो दिखाई देगा वही कहेगा आदमी। लेकिन उसके पीछे जो विज्ञान है उससे तो कोई परिचित नहीं है जिससे होना चाहिए।

तो हमारा आपका विषय सरस्वती माता है तो सरस्वती जो शब्द है ये सरस्वती शब्द के दो अर्थ प्रमुख हैं। एक है विद्या और दूसरा है वाणी। सरस्वती शब्द के दो प्रमुख हैं विद्या और वाणी। विद्या का मतलब है ज्ञान, शिक्षा जिससे जीवन को उत्तम ढंग से जीया जा सके, जिससे जीना आ जावे, उठना—बैठना आ जावे वो शिक्षा है वो ज्ञान है जिससे क्या , कैसा खाना है, कब, कहां, कितना और कैसे बोलना है ये आ जाये और उत्तम मर्यादित चाल—चलन आ जाये। क्या खाना—पीना और क्या पहनना—ओढ़ना है ये समझ आ जाये। क्या सोचना है, मन में क्या विचारना है, किन विचारों से मन को दूर रखना है आदि बातें आ जाये तो यह विद्या कहलाती है, विद्या का मतलब यदि एक शब्द में कहूँ तो जीवनशैली। विद्या कहते हैं जिसके माध्यम से हमें अच्छाई और बुराई का फर्क मालूम हो

जिसके माध्यम से हमें बड़े-छोटे के साथ में कैसे व्यवहार करना है ये आ जाए। क्या खाना क्या नहीं खाना है, क्या पहनना है क्या नहीं पहनना है, कहां जाना कहां नहीं जाना है, क्या देखना है क्या नहीं देखना है ठीक है, कब खाना है कब नहीं खाना, कब जागना सोना कब जागना सोना नहीं करना है ठीक है, कितना बोलना है आदि जो चीजें हैं सुबह से लेकर शाम तक की जो दिनचर्या है जो पूरी जीवनशैली है उसको जान लेना और उत्तम तरीके से जीने लग जाना ही विद्या है। विद्या कहां मिलती है, विद्या कहां होती है, विद्या का क्या प्रयोजन है सारी चीजें विचारनी हैं। जीवन का प्रयोजन केवल खाना-पीना, सोना-जागना, दुनिया देखना और नाना वस्तुओं का भोग करना और उन्हीं में डूबे रहना उनकी प्राप्ति में और उन्हें भोगने में ही दिन-रात लगे रहना तो नहीं है। इसके अतिरिक्त भी ओर कुछ है। शरीर की आवश्यकताओं की, जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ-साथ अपने भोगता आत्मा, विश्वनिर्माता परमात्मा और संसार, शरीर और सारी भोग्य वस्तुओं का जो मूल उपादान कारण प्रकृति है इन सबको बचपन से ही जानने-समझने का प्रयास करना ये सब विद्या के अन्दर आता है। तो मैं कहता हूँ कि विद्या का मतलब वो शिक्षा वो ज्ञान है जिसके माध्यम से इन्सान को उत्तम तरीके से रहना, खाना-पीना और जीवन को जीना आ जाता है उसे विद्या कहते हैं। वो विद्या कहां मिलती है तो वो विद्या विद्यालय में मिलती है वो विद्यालय ही विद्या का प्राप्ति स्थान है, किसे मिलती है जो लेने जाता है, कौन लेने जाता है उसे क्या कहते हैं, उसे विद्यार्थी कहते हैं जो विद्यालय में विद्या को लेने जाता है। क्यों विद्या, विद्या ज्ञान ही उसका अर्थ है उसका धन है या उसका प्रयोजन है। किसलिए विद्यार्थी विद्या को प्राप्त करना चाहता है। क्योंकि विद्या जिनके पास में नहीं है हम सुनते हैं कि विद्या के बिना व्यक्ति के जीवन में सर्वत्र अन्धकार होता है, विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान होता है, विद्या के बिना कितना ही धन हो, कितनी ही वैभव हो, कितना ही पूर्वजों से या अपने माता-पिता, दादा-दानी की सम्पदा से मिल गया हो लेकिन यदि विद्या नहीं, विवेक नहीं, समझ नहीं तो वो धन भी सब चला जाना है और उसके होते हुए भी आप सुखी रहें ये कोई जरूरी नहीं है। इसलिए ये प्रमुख बात है कि विद्या वो है कि हमारे पूरे जीवन के अन्धकार को दूर कर देती है और सारे जीवन में ऐसा प्रकाश भर देती है जिस प्रकाश में हमें सबकुछ साफ-साफ दिखाई देने लगता है। तो विद्या मिलती है विद्यालय में क्योंकि वो विद्या का आलय, विद्या का स्थान है इसलिए विद्या वहां मिलती है विद्या को लेने वहां विद्यार्थी जाता है विद्यार्थी को विद्यार्थी इसलिए कहते हैं

क्योंकि वो विद्या-अर्थी अर्थात् विद्यार्थी का अर्थ जो है, प्रयोजन जो है वो विद्या है। विद्यालय उसे वहां विद्यालय में गुरुजनों से मिलती है। गुरुजनों के पास विद्या चलकर वेदों से, शास्त्रों से आती है। वेदों में विद्या ईश्वर से, परमात्मा से आती है। सबसे बड़ा विद्वान् ईश्वर है, परमात्मा है जिसने इस पूरी जगती को, पूरी दुनिया को बनाया है। विद्या किसके सम्बन्ध में होती है इस दुनिया के सम्बन्ध में होती है जो दुनिया है इसके बारे में विद्या होती है। वस्तु का यथार्थ स्वरूप ही विद्या है, वस्तु का यथार्थ स्वरूप ही ज्ञान है, वस्तु को ठीक प्रकार से पहचानना ही ज्ञानी होना है। तो विद्या का सम्बन्ध सीधा विद्यार्थी से जुड़ा हुआ है और विद्यार्थी को वह विद्या वेदों से, शास्त्रों से गुरुजनों से मिलती है विद्यालय के अन्दर। उस विद्या को पाने के बाद में विद्यार्थी विद्वान् कहलाता है और जब वो विद्या नहीं मिलती है या विद्यालय में नहीं जाता है तो वही विद्याविहीन व्यक्ति, बच्चा, बालक, जवान, बूढ़ा पशु कहलाता है क्योंकि विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है।

तो ये जो सरस्वती का चित्र है, ये जो औरत बैठी हुई है जो यहां एक स्त्री के रूप में प्रतीक बनाकर हंस पर बैठा दी गई है। वास्तव में ये कोई स्त्री नहीं है यह विद्या को इन्होंने एक स्त्री का आकार दे दिया है। छोटे-छोटे स्कूल में बच्चे जा रहे हैं पढ़ने के लिए 7-8 साल के बच्चे हैं अब उनको वो कैसे समझाएं कि विद्या क्या है, उनके जीवन का प्रयोजन क्या है क्योंकि कच्चे घड़े पर मिट्टी चढ़ जाती है और घड़े के पका लेने पर पक जाने पर फिर मिट्टी नहीं चिपकती उसकी। बदलाव जब तक घड़े में लचीलापन है, कच्चापन है तब आ सकता है घड़ा पक गया तो फिर नहीं आयेगा, सूख गया तो नहीं मिट्टी बदलाव उसमें। तो बच्चा अभी-अभी विद्यालय में गया है जाने के बाद में गुरुजन उसे समझा रहे हैं कि विद्या क्या चीज है। हमारे यहां दो भाषायें शुरू से ही चलती आई हैं एक का नाम प्रतीकात्मक भाषा और दूसरे का नाम आलंकारिक भाषा। आलंकारिक भाषा अलंकारों के माध्यम से रखे-सूखे, उबाऊ विषय को भी बड़ा रूचीपूर्वक बना दिया जाता है अलंकारों के द्वारा और दूसरी प्रतीकात्मक भाषा जो विषय शब्दों से, उपदेशों से, शास्त्रों से समझ में नहीं आता उस विषय को विद्वान् लोग प्रतीकों के माध्यम से समझा देते हैं। यदि वो प्रतीक हमारे पास में है यदि वो दृष्टि वो समझ हमारे भीतर आ गई तो फिर हम विद्या के वास्तविक रूप को जो शब्दों के भीतर छिपा, शब्दों के गर्भ में छिपा हुआ है उसे निकालकर अपने जीवन में ला सकते हैं। तो ये जो सरस्वती है इसका मतलब है विद्या

और वाणी। जो अच्छी वाणी है उसको सरस्वती कहते हैं, जो हितकारक है उसे सरस्वती कहते हैं और जो ये स्त्री की आकृति है इसको भी यहां चित्र में सरस्वती के रूप में हम मानकर चल रहे हैं ताकि ये प्रतीक हमारे समझ में आये।

ये जो हंस हैं ये हंस विद्यार्थी का उपनाम या विद्यार्थी के लिए एक उपाधि है। जब विद्यार्थी विद्यालय में विद्या अर्जन करता है तो उस विद्या के अर्जन करते-करते ज्यों-ज्यों उसके अन्दर ये समझ विकसित होती है हंस वाली हंस का गुण जब विद्यार्थी में आने लगता है, हंस होता है नीर-क्षीर-विवेकी यानि दूध और पानी को अलग करके दूध को पी लेता और पानी को छोड़ देता है। जब यही कुशलता विद्यार्थी में आ जाती है, यही योग्यता जब विद्यार्थी में आ जाती है कि वो आस-पास समाज में जो उसके आजू-बाजू अच्छाई और बुराई फैली हुई है उस अच्छाई और बुराई को वो अलग-थलग कर दे। उसमें भेद कर दे ये बातें उसके हित की हैं और ये बातें उसके अहित की हैं। ये खाने की चीजें उसके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं और ये खाने की चीजें उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। यह कपड़े उसके मन में सात्विक भाव लायेंगे और उसे समाज में एक अच्छा मान देंगे और ये वस्त्र समाज में उसको बौना कर देंगे समाज में उसकी ईमेज उसकी समझदारी को घटिया कर देंगे, समाज में उसके चरित्र की स्तुति नहीं होगी वो निन्दा का पात्र बन जायेगा। तो वस्त्रों की शोभा से आदमी शोभायमान होता है। तो जब ये उसे समझ में आ जाती है ये वस्त्र पहनने लायक है और ये पहनने लायक नहीं है, ये चीजें खाने लायक हैं ये खाने लायक नहीं हैं मांस है, मदिरा है, मछली है, अण्डा है, मांसाहार है और पेय पदार्थों में शराब है, बीड़ी, सिगरेट, धूम्रपान है, गाजा, भाग, चरस, अफीम, ब्राउन शुगर, ड्रग्स, कोकीन है ये चीजें मनुष्य को मूर्ख बनाती हैं उसकी बुद्धि को नष्ट करती हैं और उसके जीवन को तबाह करती हैं। उस बच्चे में जब गुरुजनों के द्वारा जो बताई जा रही बातें हैं उन बातों को सुन-सुनने से बार-बार और मनन करने से चिन्तन-मनन करने से जब उसमें ये समझ विकसित हो जाती है कि भई ये खाने का है और ये खाने का नहीं, ये पहनने का है और ये पहनने का नहीं ये बच्चा है इसके माता-पिता अच्छे हैं भई ये लोग अच्छे हैं इनके पास मुझे बैठना चाहिए यहां मुझे दो अच्छी ज्ञान की बातें मिलेंगी और इनके पास मुझे बैठना नहीं चाहिए ये आदमी अच्छे नहीं। जब उसमें ये समझ पैदा हो जाती है तो वो हंस बनने की ओर प्रवृत्त हो जाता है जब वो हंस

बनने के मार्ग पर चल पड़ता है। गुरुजनों की बातें सुन-सुन कर उसे जब ये बोध हो जाता है कि सुबह ब्रह्मवेला में उठना चाहिए रात को समय से सो जाना चाहिए, रात सोने के लिए होती है और दिनभर दिन काम करने के लिए होता है, पढ़ाई करने के लिए होता है। माँ-बाप ने बहुत जीवन में उपकार किए हैं तो माँ-बाप की सेवा करनी चाहिए उन्होंने जीवन दिया है, पहचान दी है तो उनके पांव छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए। गुरुजन संसार में जीने की कला सिखाते हैं विद्या के द्वारा अच्छे बुरे की पहचान कराते हैं तो उनको प्रणाम करना चाहिए। घर आए अतिथि, विद्वानों का आदर-सत्कार करना चाहिए। मोबाइल पास में है तो उसमें क्या देखना है और क्या नहीं देखना है ये समझ जब आए तो कहते हैं वो विद्यार्थी हंस बनने की ओर, हंस के पद की ओर, पुरुषार्थ, परिश्रम, विद्यार्जन करते हुए आगे बढ़ता जा रहा है, आगे की ओर बढ़ता जा रहा है। जो गुण हंस में है वो गुण विद्यार्थी में कब आते हैं जब ये विद्या उसके ऊपर आकर बैठ जाती है जैसे इस हंस के ऊपर ये सरस्वती आकर बैठ गई। ये सरस्वती आकर इस हंस के ऊपर बैठ गई इसका अर्थ ये हुआ कि विद्या, विद्यार्थी के ऊपर बैठ गई, विद्या आकर बैठ गई तो विद्यार्थी हंस बनेगा ही बनेगा। हंस वही बनता है जिसके ऊपर आकर विद्या बैठ जाती है और विद्या को कौन विद्यार्थी के ऊपर बैठाता है ऊपर बैठाने का मतलब उसके दिमाग में, उसके मन में, उसके अन्तःकरण में, उसके हृदय में, उसके चित्त में कौन विद्या को कानों से, आंखों से प्रवेश करवाता है— गुरु करवाता है, शास्त्र करवाते हैं। ज्यों-ज्यों विद्यार्थी के कानों से, विद्यार्थी की आंखों से, अन्य इन्द्रियों से, अनुभवों से, अनुभव भी सबसे बड़ी शिक्षा है, जहां सारी शिक्षाएं फेल हो जाती है वहां अनुभव की शिक्षा काम करती है इसलिए कहा जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। जहां रवि की पहुंच नहीं होती सूर्य के प्रकाश की पहुंच नहीं होती वहां कवि की सूक्ष्म बुद्धि पहुंच जाती है लेकिन जहां कवि की सूक्ष्म बुद्धि भी नहीं पहुंचती वहां अनुभवी का अनुभव पहुंच जाता है। वहां अनुभव अपनी अनुभूतियों से उन दुर्लभ चीजों को पकड़ लेता है उनकी व्याख्या न कवि कर सकता, न कवि वहां जा सकता न सूर्य की किरणें वहां पहुंच सकती। तो कहा क्या जा रहा है कि जो गुरुजनों के माध्यम से जो विद्यार्थियों को शिक्षा दी, दीक्षा दी, विद्या दी, ज्ञान दिया ये विद्या ये ज्ञान धीरे-धीरे उनके कानों से उनके मस्तिष्क में चला जाता है और अनन्त जो भीतर जो चित्त मण्डल है जिसमें सामर्थ्य है चारों वेदों के ज्ञान को धारण करने का अनन्त ज्ञानतंतु है तो उन सबपर जाकर ये बातें, ये संस्कार छप जाते हैं। जैसे नोटों की गड्डियां होती हैं, थप्पियां होती हैं

वैसे ही एक के ऊपर दूसरा, दूसरे के ऊपर तीसरा मानों संस्कार छप जाते हैं मानो संस्कार जाकर जम जाते हैं और ज्यों-ज्यों संस्कार उसमें अधिक पड़ते हैं विद्या के यानि ये विद्या ये ज्ञान उसके मस्तिष्क में, उसके हृदय में, उसके भीतर अधिक जाता है उसको अपनी सवारी बना लेता है जैसे ये सरस्वती माता ने हंस को अपनी सवारी बना रखा है इस प्रकार से जब वो सवारी बना लेता है विद्यार्थी को वो ज्ञान तो वो विद्यार्थी उस ज्ञान को पाकर हंस जैसे गुण वाला हो जाता है तो आगे वो हंस के पद को पा जाता है वो भी हंस कहलाता है। हंस क्या करता है एक तो हंस में विशेष गुण है कि वो नीर-क्षीर-विवेक होता है। दूध-पानी को अलग-थलग कर दूध को पी लेता है और पानी को छोड़ देता है। दूसरा हंस का विशेष गुण है कि वो सागर से मोती चुगता है अब ये संसार भी एक सागर है और संसार सागर के अन्दर मोती भी हैं और कंकर भी हैं, यहां शूल भी है और फूल भी हैं, यहां जहर भी है और अमृत भी, यहां प्रेम भी है और यहां पर शत्रुता भी है, यहां दया-करुणा और यहां ईर्ष्या और द्वेष भी है, यहां फूलों की माला और मीठे पकवान भी हैं तो यहां गला काटने वाले कसाई छुरियां लेकर घूम रहे हैं। यहां आस-पास मन को मलीन करने वाली आत्मा को वासना के जंगल में धकेलने वाली वासनाएं भी विचरण कर रही हैं। आजू-बाजू फैली हुई हैं। और यही पर आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली, जीव को ईश्वर से जोड़ने वाली, पिण्ड में इस आत्मा को ब्रह्माण्ड में बैठे उस परमात्मा से मिलाने वाली प्रेरणाएं भी सर्वत्र भिखरी पड़ी है। अनन्त आकाश में चमकता ये सूर्य शिक्षा का स्रोत है। अनन्त आकाश में रोज रात को आता ये चन्द्रमा अपनी कलाओं से उपदेश मानो दे रहा है। आती-जाति ऋतुएं उपदेश दे रही हैं, वृक्षों से जड़ते हुए पत्ते उपदेश दे रहे हैं, सुगन्धित फूल और नीचे नुकीले काटें उपदेश दे रहे हैं। सारा संसार मानो शिक्षा का स्रोत है, सारा संसार मानो एक पाठशाला है। समझने की बात है, विचारने की बात है, डूबकर जीवन को समझने की बात है कि विद्यार्थी में विद्या कहां से आती है। विद्यार्थी को विद्या कैसे प्राप्त होती है। विधाता का जो वेद का ज्ञान है वो विद्या का भण्डार है। उसकी एक-एक ऋचा उसके एक-एक मन्त्र में विद्या की अनन्त गहराई, ज्ञान की अनन्त गहराई, सागर के समान अनन्त ज्ञान का समुद्र भरा हुई है। एक-एक ऋचा सत्य से भरी हुई है, ऋच से भरी हुई है। सृष्टि जिन नियमों पर आधारित आगे बढ़ रही है वो सारे नियम उस ऋचा के अन्दर भरे हुए हैं। तो आजू-बाजू सर्वत्र यहां पर मोती भी है, यहां कंकर भी है, यहां विष भी है, यहां अमृत भी है, यहां देवता भी वास करते हैं और यहां दानव भी वास

करते हैं, यहां सब ओर वासनाएं भी फैली हुई है और यहां परमात्मा से मिलाने वाली भावनाएं भी फैली हुई है। ये जगती, ये संसार, ये भवसागर, इस भवसागर से पार कराने का मार्ग भी बताता है और इस भवसागर के अन्दर ऐसी चीजें भी हैं जो यहीं पर आदमी का गला पकड़ लेती हैं और उसे इसी नरक में डूबोकर अनन्त लख 84 की नारकीय योनियों में भी धकेल देती है। तो इसलिए कहा कि ये हंस जो है विद्या को पाकर विद्यार्थी हंस जैसा बन जाता है, हंस जैसा सागर में से मोती चुगता है हंस ठीक उसी प्रकार से, जैसे हंस सागर से मोती चुगता है ठीक उसी प्रकार विद्यार्थी इस संसार में मोती चुगता है कंकरों को नहीं चुगता वो यहां से राग को, द्वेष को, काम को, क्रोध को, लोभ को, मोह को, छल को, कपट को, चोरी-चारी तमाम प्रकार के जो दुर्गुण फैले हुए हैं इन दुर्गुणों को छूता भी नहीं स्पर्श भी नहीं करता क्योंकि उसके गुरुजनों ने जो उसे बताया है उसके अध्यापकों ने जो उसे समझाया है उसने जो स्वाध्यायी शास्त्रों, उसने जो वेदों को पढ़कर जो स्वयं को समझा है, स्वाध्यायी से स्वयं को जाना है उससे उसके भीतर ऐसी आंखें, ऐसे ज्ञान के चक्षु खुल गये हैं कि वो इन्हीं आंखों के भीतर से दूसरे लोग जिन चीजों को देखते हैं वो भी उन चीजों को देखता है लेकिन अर्थ सात्विक ग्रहण करता है, अर्थ स्वस्ति वाला ग्रहण करता है जिससे उसका और सबका कल्याण हो। विद्यार्थी वो है जिसका उद्देश्य विद्या हो, जिसका प्रयोजन विद्या हो और विद्या क्या है **सा विद्या या अविमुक्ति**। विद्या वही है जो मुक्ति दिलाती है किससे मुक्ति दुःख से मुक्ति, अपमान से मुक्ति, तृष्णा से मुक्ति, अनन्त लालसाओं से मुक्ति, अभिमान से मुक्ति, घमण्ड से मुक्ति, भय से मुक्ति, अविद्या से मुक्ति, अस्मिता से मुक्ति, राग-द्वेष से मुक्ति, अभिनिवेश से मुक्ति जो आध्यात्मिक दुःखों से मुक्ति का मार्ग बताती हो, आधिभौतिक दुःखों से मुक्ति का मार्ग बताती हो, आधिदैविक दुःखों से मुक्ति का मार्ग बताती हो। वही विद्या है जो शरीर की ओर नहीं शरीर से आत्मा की ओर ले जाती हो। आत्मा को शरीर में न उलझाकर परमात्मा की ओर ले जाती हो। जो मृत्यु के अन्धकार में न धकेलकर कल्याण के प्रकाश की ओर प्रेरित करती हो वो विद्या है। विद्या वो है जो इस जीवन को सर्वांगीण सुन्दर बनाती हो। जो सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् कर देती हो। विद्या वो है। तो ऐसी जो विद्या है वो विद्या जब उसके गुरुजन उसे देते हैं तो विद्यार्थी के मन में, उसके हृदय में, उसके मस्तिष्क में, उसके चित्त में, उसके दिमाग में सर्वत्र वो विद्या का ज्ञान वो संस्कार, वो स्मृतियां जो इस जीवन को समझने के लिए, जो इस जीवन में हंस बनने के लिए पर्याप्त

होती हैं जब विद्यार्थी उनको ग्रहण करता है तो विद्यार्थी का जीवन हंस बन जाता है। विद्यार्थी की आंखों में हंस वाली दृष्टि आ जाती है। विद्यार्थी की जीभ में, विद्यार्थी की त्वचा में, विद्यार्थी की नाक में, विद्यार्थी के ज्ञानेन्द्रियों—कर्मेन्द्रियों में, विद्यार्थी के मन, में उसकी बुद्धि, उसकी चित्त में, उसके अहंकार में सर्वत्र विद्या छा जाती है और विद्या की सात्विक प्रकाश से वह विद्यार्थी इस संसार के अन्दर सर्वत्र इस जीवन के लक्ष्य को, जीवन के उद्देश्य को देखने लगता है कि विधाता ने मुझे संसार में क्यों भेजा है। और ये विद्यार्थी ये काम वो बचपन से जब स्कूल में, गुरुकुल में जाता है तब से ही आरम्भ हो जाता है तो हमारे यहां प्रतीकात्मक विद्या है। अ से अनार सिखाते हैं तो वहां अनार का चित्र साथ में दिखाते हैं ताकि अनार के चित्र से बच्चे को सरलता से समझ में आ जाये। प्रतीक से प्रतीक के पीछे का सन्देश पकड़ में आ जाता है। प्रतीक के माध्यम से जब शिक्षा दी जाती है तो दिमाग में, मस्तिष्क की मांसपेशियों और नसों में तनाव पैदा नहीं होता विद्यार्थी बोरियत में नहीं जाता, विद्यार्थी उबाऊ में नहीं जाता और विद्यार्थी के अन्दर आनन्द पैदा होता है ज्यों—ज्यों विद्यार्थी को विद्या सरलता से बताई जाती है ज्यों—ज्यों समझ में आती है त्यों—त्यों भीतर से खुशी फूटती है। त्यों—त्यों सुनने वाले आनन्द की लहरे उठती हैं धाराएं बहती है। तो जब विद्यार्थी हंस के समान विद्या को पाकर बन जाता है तो इसी संसार में से वो मोतियों को चुगता है। वो सूर्य को देखकर परमात्मा से प्रेरणा लेता है, सूर्य से प्रेरणा लेता है। **स्वस्तिपंथा मनुचर्येम सूर्याचन्द्रमा साविवाह पुनददताग्नताजानतसंगमेवही।** इनसे देखकर वो प्रेरणा लेता है वो भगवान के उपदेशों को जीवन में सार्थक करता है। विद्या क्या है — **साहृदयं सामनस्यमविद्वेषमकृणोमिवहअन्योअन्यंअभिहर्यतः वत्संजातंविब.....**। ये परमात्मा का परमपिता का सबसे बड़े गुरु, गुरुओं के गुरु परमात्मा का उपदेश है। क्या उपदेश है— **सहृदयं** — मैं सबको अच्छे हृदय वाला भाई बनाकर भेजता हूँ। **सामन्स्यम—** सबको समान मन वाला बनाकर भेजता हूँ सबको कोरा कागज देकर भेजता हूँ उनके माँ—बाप अपने ज्ञान, अपनी अक्ल, अपनी समझ, अपनी विद्या के आधार पर उन बच्चों के खाली कागज में, खाली दिमाग में क्या उतारते हैं, क्या लिखते हैं, क्या उनको सिखाते हैं, क्या उनको बताते हैं, क्या उनको खिलाते—पिलाते हैं, क्या उनको उढ़ाते—पहनाते हैं, कैसी उनको शिक्षा देते हैं जैसी देते हैं वैसी उनके बच्चों में चली जाती है। और वो बच्चे वैसे ही बन जाते हैं। बच्चों को बच्चा इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनको बुराइयों से बचाया जाता है। बचाने की शिक्षाएं देनी चाहिए इसलिए उनको बच्चा

कहा जाता है, बच्चे कहा जाता है, बच्चियां कहा जाता है। तो जब भगवान विधाता ही सबसे बड़ा अध्यापक ही, सबसे बड़ा गुरु, परमगुरु परमेश्वर ही यह कह रहा है कि मैं सबको अच्छे हृदय वाला बनाता हूँ तो अपने हृदय को अच्छा ही रखो। समान मन वाला तो सबके प्रति समान का भाव रखो मैं एक ही पिता की सन्तान हूँ। जब वो विधाता इस बात को कहता है। **सामन्स्यमअविद्वेषमकृणोमिवह**—बोले सबको मैं द्वेष भाव से रहित करता हूँ, बच्चों के मन में किसी के प्रति कोई बैर भाव नहीं होता, उनके लिए कोई हिन्दू—मुस्लिम—सिक्ख—इसाई नहीं होता, उनके लिए कोई ऊँची—नीची जाति वाला नहीं होता। वो जो बच्चे हैं उनके लिए सब एक जैसे हैं, इसीलिए तो लोग कह देते हैं कि बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं क्योंकि उनमें कोई भेदभाव नहीं वो सबके प्रति समान दृष्टि रखते हैं। ज्यों—ज्यों वो हमारी गलत शिक्षा से बढ़ते जाते हैं, ज्यों—ज्यों वो हमारे राग—द्वेष को ग्रहण करते जाते हैं, ज्यों—ज्यों वो हमारी कुटिलता, चतुराई, हमारी भेद भरी दृष्टि, और हमारे बिगड़े आचरणों को देखते हैं, सुनते हैं, महसूस करते हैं, त्यों—त्यों वो भी बिगड़ते जाते हैं, उसमें उनका कोई दोष नहीं सारा दोष हमारा है। भगवान ने तो कोरा कागज भेजा था उसमें गालियां लिख दो आप, उसमें ईर्ष्या—द्वेष लिख दो, उसमें आप छल—कपट के भाव भर दो तो बच्चा वही पढ़ेगा और वैसा ही बनेगा। तो परमात्मा ने कहा—अन्योअन्यंअविहर्यतेवत्संजातंमेवाग्नः..... — कहा मैं तुम्हें एक—दूसरे से द्वेष—भाव से रहित करता हूँ। **अविद्वेषकृणोमिवह— अन्योअन्यं** —एक—दूसरे से द्वेष भाव से रहित करके तुम्हें दुनिया में भेजता हूँ। और कहा जातंमेवाग्न, वत्संजातंमेवाग्नः — जैसे ये अग्न्याः हैं जिसको कभी मारा नहीं जाता आज तो मार—मारकर खा रहे हैं। कैसे धरती सुखी होगी। कैसे इस वसुंधरा की सन्तानों को शान्ति मिलेगी। कैसे इस संसार में शान्ति, प्रेम भावना फैलेगी। आज तो परमात्मा के उस उपहार को लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट और अज्ञान के अन्धकार में डूबे हुए इन्सान मार—मारकर खा रहे हैं। अग्न्या कहते हैं गाय को गौ माता को। जिससे नाना उपकार होते हैं, किसान को उससे खाद मिलता है जिससे नया अन्न उपजता है उस अन्न से प्राणियों के प्राणों की रक्षा होती है उस गाय से दूध मिलता है उस दूध को पीकर बच्चों की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, तेज होती है, सुमेधा बनती है, और उन बच्चों के शरीर में मांसपेशियां पुष्ट होकर शरीर बलिष्ठ बनते हैं। उस मा। को आज काट—काटकर खा रहे हैं इस संसार भ्रष्टा होता जा रहा है। तो कहा भगवान ने कहा कि जैसे गांय नवजात बछड़े से, बछिया से प्रेम करती है, हाथ—पैरों से नहीं अपनी जीभ से

लाढ़ लड़ाती है, तुम भी वैसे आत्मा से, प्राणों से, अपने हृदय से सब प्राणियों से प्यार करना उस गाय के समान। ये भगवान की शिक्षा है। उद्यानंतेपुरुषनावयानमजीवातुन्त..... कृणोमि। आहिरोहइममरथंमथजीरवीररथंसुखरथं.....अथजीरवीर.....। हे मनुष्य मैं तुझे संसार में ऊपर उठने के लिए भेजता हू अब ये भगवान हमें कह रहे हैं ये विधाता वेद के द्वारा हमें विद्या दे रहा है ये विद्या ही सरस्वती है, ये ज्ञान ही सरस्वती है, जब इस ज्ञान में लोगों की प्रति उदारता हो, प्रेम हो, करुणा हो, दया हो, उनके दुःखों का, उनके कष्टों का समाधान हो, उनका अज्ञान, उनका भय, उनकी निराशा दूर होती है जब इस वाणि में इस प्रकार का रस भरा हो जिस रस से दुखियों के दुःख दूर हो जाते हैं उनकी समस्याओं के समाधान हो जाते हों। उन क्षणों में ये विद्या, ये सरस्वती, ये विद्या सरस्वती बन जाती है। सरस्वती बन जाती है यह रसवति बन जाती है। जब श्रोताओं पर विद्वान वक्ता विद्या की वर्षा करता है तो श्रोता आनन्दित हो जाते हैं श्रोताओं के हृदय धन्य-धन्य कहने लगते हैं और श्रोताओं की आत्मा उस विद्या रूपी रस को पाकर, उस अमृत को पाकर अपने जीवन में जो अज्ञान का अन्धकार फैला है, हृदय में, बुद्धि में, अन्तःकरण में वो सब विद्या के प्रकाश दूर हो जाता है और श्रोता आनन्दित हो जाते हैं। तब इस विद्वान की वाणि वीणा बन जाती है और तब उस विद्वान की विद्या सफल हो जाती है। अब वो विद्वान जहां-जहां जाता है, जैसे ये हंस जहां-जहां जाता है, वहां-वहां इसकी योग्यता, इसकी प्रतिभा, इसकी कुशलता जो इसके अन्दर विशेषता है मोतियों को चुगने की और दूध-पानी नीर-क्षीर को अलग-थलग करके दूध को पीने की वो योग्यताएं इसके साथ-साथ रहती हैं। ये योग्यता, ये प्रतिभा, ये कुशलता ही तो विद्या है जो इस हंस पर बैठी हुई है ये विद्यार्थी जब हंस बन जाता है। विद्या को प्राप्त करके जब गुरुजनों के द्वारा, गुरुकुल में, विद्यालय में पढ़ाई हुई विद्या उस विद्यार्थी में जाकर बैठ जाती है जैसे ये तस्वीर में ये सरस्वती के रूप में एक औरत को इस हंस पर बैठा रखा है ठीक ये विद्या का रूप है और ये विद्यार्थी में जब शास्त्रों की विद्या को गुरुजन बैठा देते हैं उसके मन में उसमें बैठ जाती है तो वो विद्यार्थी ही हंस बन जाता है और उसमें बैठी हुई जो विद्या है वो इस हंस के समान वो विद्यार्थी रूपी हंस जहां-जहां जाता है वहां-वहां उसके साथ जाती है और वो घूमता हुआ सर्वत्र सब जगह से मोती चुगता है यानि अच्छाइयों का ग्रहण करता है। जो मोती सर्वोत्तम है सागर में वो सर्वोत्तम इस संसार में जो भी दुर्लभ वस्तुएं हैं उनका चयन करता है और अच्छाई -बुराई को छांटता है, श्रेष्ठता और निकृष्टता में अन्तर करता है।

दूध श्रेष्ठ है पानी बिन पैसे के मिल जाता है अब आज की बात अलग है ये ठहरा कलयुग। लेकिन दूध तो बहुत महंगा मिलता है जो महंगी चीज है जो विशेष है मूल्य उसी का होता है जिसमें कुछ विशेषता होती है। तो यहां इस बात की ओर ध्यान दिला रहे हैं कि जो हंस के अन्दर विशेषता को पकड़ने की जो विद्या को पाकर जो क्षमता आई विद्यार्थी में आ जाती है और विद्यार्थी भी फिर अच्छाई-बुराई में अन्तर करके जैसे हंस दूध-पानी में अन्तर करके दूध पी लेता है वैसे विद्यार्थी भी अन्तर करके दूध को अर्थात् अच्छाई को ग्रहण करता है, अच्छाई को देखता है, अच्छाई को सुनता है, अच्छे कपड़े पहनता है, ये विद्यार्थी छात्रा भी है और ये विद्यार्थी छात्र भी है, ये विद्यार्थी बालिका भी है और ये विद्यार्थी बालक भी है जिससे दोनों का जीवन सुन्दर बनता है जिनसे दोनों के कुलों की मर्यादा बनी रहती है, जिनसे दोनों के कुलों की कीर्ति बनी रहती है, जिनसे दोनों का यश युगों तक जीवित रहता है। जैसे पूर्वजों का यश आज जीवित है वैसे यश की कीर्ति की पताकाएं हमेशा लहराती रहती है वो कब होता है जब विद्या के अनुरूप हंस बनकर ऐसे ग्रहण किया जाए अच्छी बातों को अच्छे ढंग से जीवन जीया जाए तब जाकर सफलता मिलती है। तो ये जो प्रतीकात्मक चित्र है इसका अभिप्राय ये है ये शुरू से हैं इसमें कोई पाखण्ड नहीं है, ये कोई अन्धविश्वास नहीं हैं हाँ इसको अब आप मिटाई खिलाओ, इसके आगे अगरबत्ती लगाओ इससे कोई मतलब नहीं इससे कुछ नहीं होगा, इसकी आपकी बुद्धि और दिमाग और जड़ जो जायेगा। मैं इतने विद्यालयों में गया लेकिन कोई भी मुझे ऐसा नहीं मिला जिसने इसका स्वरूप मुझे समझाया हो जो 50-50, 60-60 साल से विद्यालयों में पढ़ा रहे हैं उनको पता नहीं वो बच्चों से अगरबत्तियां लगवा रहे हैं और कह रहे हैं कि ये तो विद्या की देवी सरस्वती है। मैं बच्चों को खड़ा करके पूछ रहा हूँ मैंने कहा कि रामलाल तुम बताओ तुमने अपने विद्यालय में किसी विद्यार्थी को इस विद्या की देवी के द्वारा शिक्षा देते हुए देखा है। मैं विद्यार्थियों से पूछ रहा हूँ कि इसका क्या नाम है बोले विद्या की देवी। मैंने कहा कि ये क्या करती है बोले विद्या देती है। तो मैंने पूछा विद्यालय में किसको विद्या दी किसके सामने विद्या दी उसका नाम बताओ वो हाथ खड़ा करे सबकी आंखे झुकी हुई सारे अध्यापक मौन हैं। जो साधारण अध्यापक जो छोटे बच्चों को पढ़ाने वाले नहीं हैं एल.के.जी. में जो बड़ी कक्षाओं को पढ़ाने वाले जो लेक्चरार, प्रोफेसर जो हैं, जो प्रधानाध्यापक, जो प्राचार्य हैं वो भी मौन हैं। क्योंकि हम जड़ की पूजा करके, हमारी खोपड़ी, हमारा दिमाग, हमारी बुद्धि सब जड़ हो गई है। इसी जड़ प्रतिमा के

पीछे जो संदेश है जो प्रतीक छिपा हुआ है वो हमारी बुद्धि को जागृत करता है, हमारी बुद्धि में प्रकाश पैदा करता है, वो हमारे अन्दर ज्ञान का स्रोत उद्घाटित करता है। तब जाकर विद्यार्थी प्रकाश से, ज्ञान से भरता है और ऐसा विद्यार्थी अपना और समाज और राष्ट्र और विश्व का कल्याण करता है। तो कहा क्या जा रहा है कि इसकी पूजा नैवेद्य से, पुष्पों से, फूलों से, वो पूजा नहीं है, एक बच्चा जो स्कूल में, विद्यालय में गुरुकुल में जो छात्र जो टॉपर है सबसे अच्छा पढ़ने के अन्दर उस बच्चे को आप पूजा में लगा दो, मावा-मिष्ठान बांटने में या अगरबत्ती घुमाने में या सरस्वती वन्दना में लगा दो और दूसरा जो विद्यालय के अन्दर सबसे जीरो है, सबसे शून्य है, जिसका दिमाग सबसे बूटा है उस विद्यार्थी पर 10 अध्यापक लगा दो। परीक्षा में देखो आपका टॉपर वाला बच्चा पास होता है या जो ये जीरो था ये हीरो बनता है। आपका हीरो जीरो जायेगा और आपका जीरो हीरो बन जायेगा। इसलिए पूजा का अर्थ बिना सोचे, विचारे किसी क्रिया को करना नहीं है। पूजा का अर्थ है जो बुद्धिपूर्वक हो, जो सार्थक हो, जो तर्कों पर जो तर्कों की तुला में तोला गया हो और जो वास्तव में लाभदायक हो, ये शिक्षा जब विद्यार्थियों को दी जायेगी तब विद्यार्थी विद्यालय से ही बुद्धिमान बनेंगे इसलिए विद्यालय में ये प्रतिमा होनी चाहिए और इसका हर विद्यालय के अन्दर अर्थ बताया जाना चाहिए और आप सबसे भी मेरा अनुरोध है कि इसको इतना फैलाओ, इतने विद्यालयों में, इतने अध्यापक, टीचर के पास में पहुंचाओ कि सारी दुनिया में ये बात जाए, और हर विद्यालय के अन्दर सरस्वती की प्रतिमा हो और इस प्रतिमा का प्रतीकात्मक ये जो अर्थ है ये जो अभिप्राय है ये हर अध्यापक अपने विद्यार्थियों को खोल-खोलकर समझाए। फिर हमारा विद्यार्थी जगत, फिर हमारी छात्र-छात्राएं जीवन के मूल्यों को समझेंगे फिर वो हंस बनकर इस संसार में मोतियों का चयन करेंगे, मोतियों का ग्रहण करेंगे, फिर गुणों का ग्रहण करेंगे। संसार में दुर्गुण भी और सगुण भी है इसलिए भगवान ने कहा, इसलिए ईश्वर ने कहा वेद में दुरिधानी.....

..... – दुर्गुणों को छोड़ो और अच्छाइयों को अपनाओ, उनको धारण करो, हमारी तो संस्कृति का ही संदेश यही है हमारा तो देश का नाम भी भा यानि ज्ञान और रत यानि निरन्तर ज्ञान की प्राप्ति में लगे रहना ही भारत का काम है। तो जिस देश का नाम ही ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रेरित करता हो और भारतीय संस्कृति का स्वरूप भी यही है जो महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने वेदभाष्य में हर अध्याय के आरम्भ में जो वो मन्त्र लिखा है विश्वानिदेवसर्विर्दुशितानिपरासुयदभद्रतन्नाआसुर। यदभद्रतन्नाआसुर – जो भद्र है, कल्याण

है, अच्छी बातें , अच्छे विचार हैं, अच्छे आचरण, अच्छा जीवन वो हमारे अन्दर आ जाये, **दुरितानिपरासुव** – जो बुराइयां हैं वो सब चली जायें जीवन से और अच्छाइयां आ जाये इसलिए हमारे यहां क्या कहा गया ये भारतीय संस्कृति का सन्देश है— **असतो मा सद्गमय** – असत्य से हम सत्य की ओर बढ़ें, **तमसो मा ज्योतिर्गमय** – हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ें, ज्ञान के प्रकाश की ओर, अज्ञान के अन्धकार का त्याग करें और क्या कहा गया और कहा गया **मृत्योर्मा मिदमगमय**— हम मृत्यु से मरणधर्मा जीवन से अमृत जीवन की ओर शरीर से आत्मा की ओर और आत्मा से हम परमात्मा से जुड़े। **याविद्यासाविमुक्ते**— ये पाठ विद्यार्थी को बचपन में पढ़ाया जाता है। तो इसलिए इस प्रतिमा का इस प्रतीक का जो वास्तविक मतलब है वो ये है ये जो सरस्वती जो यहां पर स्त्री के रूप में एक पक्षी पर बैठाई हुई है इसका मतलब विद्या, ज्ञान, शिक्षा है और इसके हाथ में जो वीणा है ये विद्वान जब विद्यार्थी विद्या को पाकर, ज्ञान को पाकर, शिक्षा को पाकर विद्वान् बन जाता है तो विद्यार्थी की वाणि ही इस सरस्वती के हाथ की वीणा बन जाती है। उस विद्यार्थी की वाणी ही सरस्वती होती है और उस सरस्वती का जो संगीत है उस ज्ञान का जो वक्ता अपनी वाणी के द्वारा जो वर्षा कर रहा है श्रोताओं पर उस वाणी में, उस शब्दावली में, उन संदेशों में, उन कथानकों में, उन उपदेशों के अन्दर, जो प्रकाश है, जो ज्ञान है, जो लोगों के अज्ञान को दूर कर रहा है, जो उनकी समस्याओं का समाधान कर रहा है और उससे लोगों के हृदय में और उनके मन में जो आनन्द हो रहा है जैसे वीणा को सुनने से सुनने वाले को होता है। इसलिए कहा विद्वान् जब विद्या को पाता है, विद्यार्थी जब विद्या को पाता है तो वो विद्यार्थी हंस की उपाधि को पा लेता है वो हंस बन जाता है और जब हंस बन जाता है और जब वो हंस बन जाता है तो उसकी वाणी सरस्वती बन जाती है और उसकी वाणी जब सरस्वती बन जाती है तो वो वीणा के समान आनन्ददायक हो जाती है ये इस प्रतीक का अभिप्राय है। इसलिए इसकी पूजा का मतलब ये है अपने आपको हंस बनाओ, अच्छे शास्त्रों का अध्ययन करो, और ध्यान रखें जो शुद्ध ज्ञान है वो वेद में है क्योंकि वेद ही ईश्वरीय वाणी है और जो शुद्ध ज्ञान है ऋषि—मुनियों ने, जिन ऋषि—मुनियों ने वेदों का अध्ययन किया है वेदों के अनुसार शास्त्र लिखे हैं उनमें भी सत्य ज्ञान है और जो उनको पढ़—लिखकर संसार में प्रचार—प्रसार करने वाले विद्वान हैं, प्रचारक हैं, उपदेशक हैं, भजनोपदेशक हैं, ये जो सारे लोग हैं इनकी बातों में सत्यता है, वो विद्या है। ये जो आजकल पुस्तकों में जो उल्टी बातें भी पढ़ाई जाती हैं जो सृष्टि नियमों के विरुद्ध है यदि

ऐसा कुछ है तो वो विद्या नहीं वो अविद्या ही है। इसलिए ये जो हमारा प्रतीकों की उपासना का पाठ चल रहा है, कक्षा चल रही है इसमें आज हमने भगवती मां सरस्वती जो विद्या है वेद का ज्ञान है, परमात्मा की वाणी, वेदवाणी है उसकी आज हमने उपासना करी और जो लोक में उसको समझाने के लिए, उससे जोड़ने के लिए, विद्यार्थियों की आत्मा में उस सत्य को पहुंचाने के लिए जो नन्हे-मुन्हे विद्यार्थियों को भी इस अद्भुत रहस्य को समझाने के लिए जो ये प्रतीक बनाया गया है उसपर आज हमने विचार किया। आज के पाठ को इतना ही रखते हैं। शेष चर्चा आगे करेंगे। इसको समझें और और इसको फैलायें और जन-जन तक पहुंचाये। इति ओम सम। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज के पाठ को यही विराम देते हैं। अब शान्ति पाठ—

ओम् द्यौ शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः सर्वः शान्तिः

शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥